



सच की जमीन न छोड़ें कलाकार

सैयद हैदर रजा देश के उन बड़े कलाकारों में से हैं जिनकी पेंटिंग्स दुनिया भर में सराही जाती हैं। 92 बरस की उम्र में भी उनका उत्साह देखते बनता है। मीनाक्षी सिन्हा को एक बातचीत में उन्होंने अपनी हाल की गतिविधियों और योजनाओं के बारे में बताया:

मेरा भारत लौटना बहुत फलदायक और रचनात्मक रहा। हालांकि मेरी यह उम्र और बदली हुई स्थितियां कभी-कभी मुश्किल भी खड़ी करती हैं, फिर भी मैं कई कला प्रदर्शनियों, रचना पाठ, संवाद, संगीत और नृत्य कार्यक्रमों में पहुंच ही जाता हूं। और फिर रजा फाउंडेशन भी काफी कुछ करती रहती है। उसके कार्यक्रमों को भी मैं एंजॉय करता हूं। मेरी इच्छा है कि दिल्ली में समकालीन कलाओं का एक संग्रहालय बनाया जाए। मैं खुद भी रजा फाउंडेशन को मजबूती प्रदान करते हुए अपनी पेंटिंग करते रहना चाहता हूं और गांधी पर अपना प्रोजेक्ट भी पूरा करना चाहता हूं। इसी दौरान मेरा निजी संग्रहालय भी आकार लेता जा रहा है। प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप



बनने के दिनों में हम लोग सामूहिक सोच में यकीन रखते थे। कला और जीवन के बारे में हम व्यक्तिगत विचार को बिल्कुल प्रस्तुत नहीं करते थे। लेकिन हुआ यह कि हम सब अलग-अलग दिशाओं में अपने-अपने रास्ते चल दिए। मुझे कोई और ऐसा ग्रुप ध्यान नहीं आ रहा जिसमें इतनी विवधता रही हो। बात चाहे प्रतिष्ठा की हो, रचनात्मकता की हो या क्रिटिकल पहचान की हो, अच्छी बात है कि आधुनिक भारतीय कला दुनिया की कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय कला परंपरा में बहुत कुछ उल्लेखनीय है। मैं गायतोंडे, तैयब मेहता, राम कुमार, अकबर पदमसी, कृष्ण खन्ना, के जी सुब्रमण्यम, गणेश पाइन, मंजीत बावा, अर्पिता सिंह और जोगेन चौधरी का प्रशंसक हूं। आज की युवा पीढ़ी में मनीष फुसकेले, सुजाता बजाज और अखिलेश मुझे प्रिय हैं।

जिन वजहों से हुसेन को देश छोड़कर जाना पड़ा, वे बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण हैं। वह मेरे पुराने मित्र और कमाल के पेंटर थे। दरअसल, आर्टिस्ट की रचनात्मकता के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बहुत जरूरी होती है। अगर उसका दमन कोई भी फोर्स करती है तो कलाकार के लिए बहुत विपरीत स्थितियां हो जाती हैं। आज के कलाकारों को चाहिए कि वे अपने सच की जमीन को न छोड़ें। वे अपनी खोज को हरदम जारी रखें।